समग्र शिक्षा, मध्य प्रदेश
2020-21
बुलबुल
गिजुभाई का गुलदस्ता-1
रंग बिरंगी मुर्गी
गिजुभाई बधेका
अनुवाद, रूपांतरण एवं चित्रांकन
आबिद सुरती

नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई की गुलदस्ता-1

रंग बिरंगी मुर्गी

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, रूपांतरण एवं चित्रांकन
आबिद सुरती

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

ISBN 978-81-237-4786-6

पहला संस्करण : 2006
चौदहवीं आवृत्ति : 2021 *(शक 1943)*

Rang Birangi Murgi *(Hindi)*

₹ 75.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in
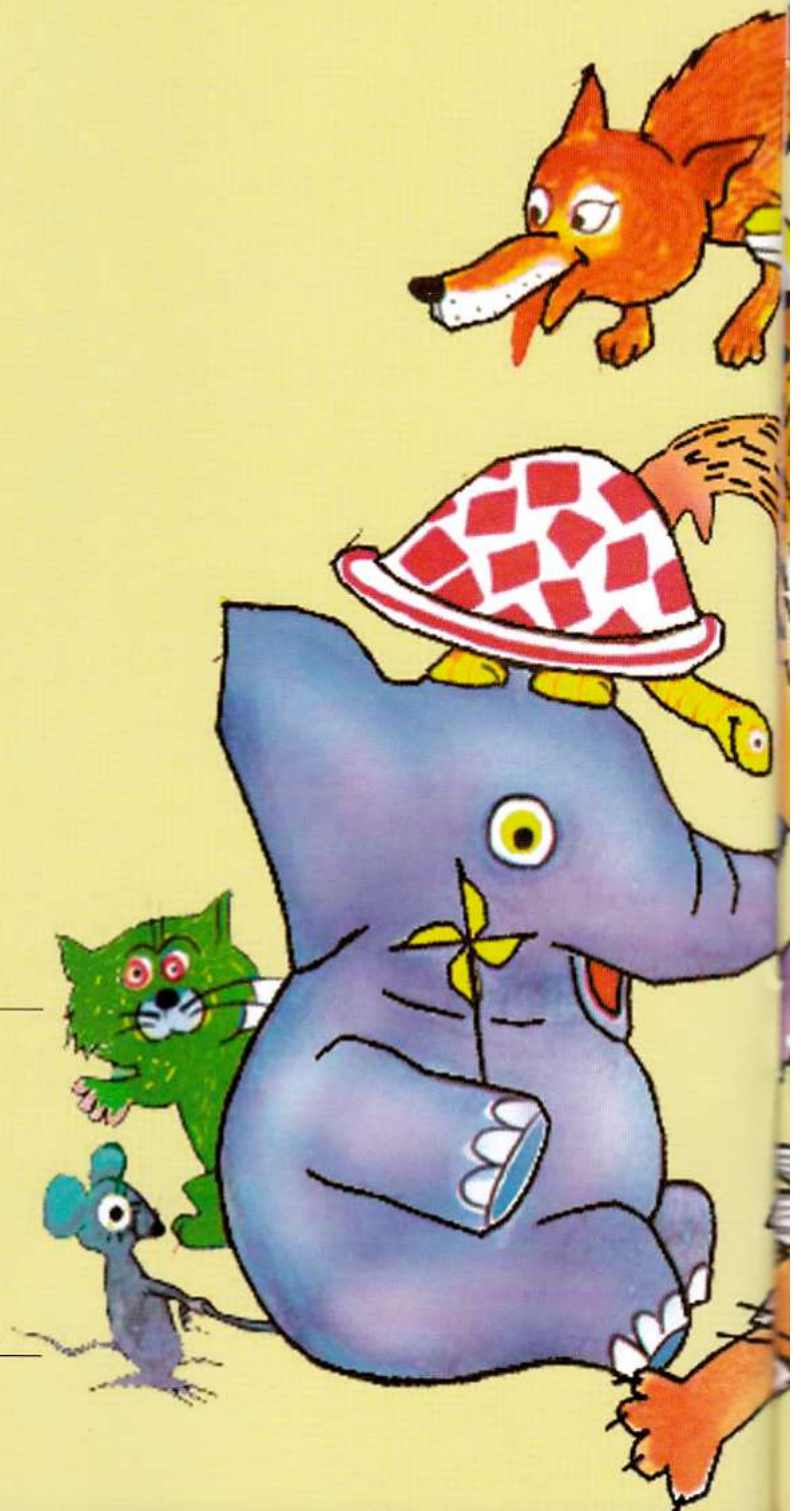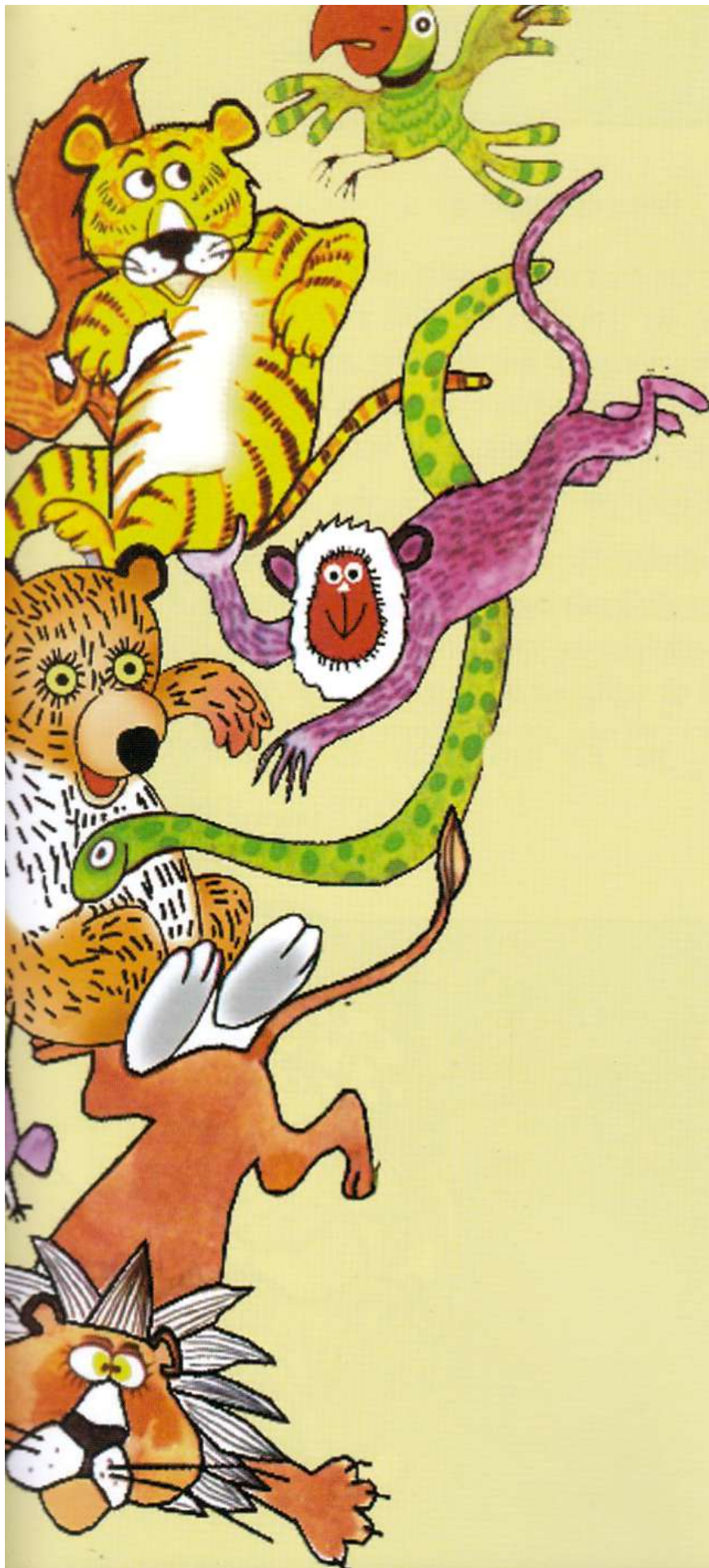
शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये हैं बाल-कथाएं। आप बच्चों का इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आप कभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई

लड्डू चोर

कहानी कहूं ताजा, सुन ले मेरे राजा, राजा ने बनाया महल, चूहा तो गया दहल, चूहे ने खोदा कुंआ, उस में से निकली बुआ बुआ ने पिरोई सूई, ताऊ जी बोले उई, नाना ने दिये दाम, तब नानी ने खाये आम, गुठलियां मैंने बाग में डाली, बाग ने मुझे पेड़ दिये पत्ते मैंने बकरी को डाले, बकरी ने मुझे दूध दिया, दूध मैंने मोर को पिलाया, मोर ने मुझे पंख दिया, पंख मैंने राजा को दिखाया, राजा ने मुझे घोड़ा दिया घोड़ा मैंने बबूल से बांध, बबूल ने मुझे कांटा दिया, कांटा मैंने पर्वत को चुभोया, पर्वत की हवा निकल गई, बन गया पर्वत इतना छोटा, जैसे हो चूहा तगड़ा मोटा चूहे ने दिया मिट्टी का ढेर, मिट्टी मैंने कुम्हार को दी, कुम्हार ने एक गगरी बनाई, गगरी मैंने माली को दी। माली ने मुझे फूल दिए, फूल मैंने भगवान पर चढ़ाए, भगवान ने मुझे लड्डू दिए।

डिंग-शास्त्र

एक था ब्राह्मण। वह काशी से ज्ञान प्राप्त कर आया था। काम की तलाश में था। तभी उसे पड़ोस के गांव से न्योता मिला। वह कथा सुनाने पहुंच गया। उसे आया देख गांव के पंच इकट्ठा हुए और उसे मुखिया के घर ले आए। वहां उसके रहने का अच्छा इंतजाम हो गया। दोपहर को बढ़िया भोजन भी मिला। घंटा भर विश्राम
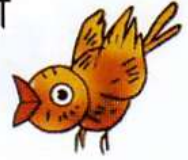
कर ब्राह्मण चौपाल पर आया। गांव वालों ने पूछा, 'पंडित जी, आप हमें क्या सुनाएंगे?'

वह बोला, 'हम भागवत कथा सुनाएंगे। सच्चे धर्म का मार्ग दिखाएंगे।'

तब मुखिया बोला, 'यह तो बड़ी अच्छी बात है। आप रोज शाम को हमें कथा सुनाना, लेकिन हमारी एक शर्त है।' वह चौंका। मुखिया ने आगे कहा, 'अगर हम हरे नमः कहते थक जाएं, तो दक्षिणा में आपको पांच सौ रुपये देंगे और अगर भागवत सुनाते हुए आप थक जाएं, तो अपनी पोथी यहीं छोड़ कर लौट जाएंगे।'

ब्राह्मण ने मुस्कुरा कर कहा, 'हमें शर्त मंजूर है।'

दूसरे दिन से ब्राह्मण ने भागवत-कथा शुरू कर दी। वह एक श्लोक पढ़ता और उसका मतलब समझाता। गांव वाले एक सुर में 'हरे नमः' बोलते। वह दूसरा श्लोक पढ़ता और उसका मतलब समझाता। फिर से गांव वाले एक सुर में 'हरे नमः' बोलते।

ब्राह्मण को काफी पढ़ना पड़ता था। श्रोताओं को समझाने में काफी बोलना भी पड़ता था। तब कहीं गांव वाले एक बार सिर्फ 'हरे नमः' कहते थे। ब्राह्मण तो कथा सुनाते-सुनाते थक गया। छह दिनों के बाद उसका गला भी बैठने लगा। सातवें दिन एकदम बैठ गया। बहुत कोशिश की पर गला खुला ही नहीं। आखिर उसने अपनी हार स्वीकार कर ली। तुरंत मुखिया बोला,'महाराज...अपनी पोथी यहां छोड़िए और चलते बनिए।'

बेचारा ब्राह्मण क्या करता? भागवत ग्रंथ छोड़ कर वह अपने गांव लौट आया। घर पहुंच कर उसने अपने बड़े भाई को सारा किस्सा सुनाया। बड़ा भाई था, चोटी, चतुर। उसने सौगंध ली...यदि एक सप्ताह में भागवत वापस ले कर नहीं लौटा तो मूछों के साथ चोटी भी मुंडवा लूंगा। वास्तव में बड़ा भाई दो जमात से आगे नहीं पढ़ा था। शास्त्रों के काले अक्षर उसके लिए भैंस बराबर थे। लेकिन डिंग-शास्त्र का वह माहिर था। देहातियों को उल्लू बनाने का करतब वह अच्छी तरह जानता था। दूसरे रोज वह उसी गांव पहुंचा और चौपाल में जा कर बैठ गया। गांव वालों ने उसके चरण छुए! जब सब बैठ गये तो मुखिया ने उलाहना देते हुए कहा, 'कहिए महाराज, क्या आप भी कथा सुनाने पधारे हैं? एक पंडित तो यहां अपनी पोथी छोड़ कर गए हैं। आप को भी अपनी नाक कटवानी हो तो हो जाइए शुरू।'

उसने कहा, 'सब पंडित एक से नहीं होते। कथा-कथा में भी फर्क होता है। मैंने डिंग-शास्त्र पढ़ा है। इसका जानकार आपको चिराग ले कर तलाशने पर भी नहीं मिलेगा।'

मुखिया बोला, 'क्या आप हमारी शर्त जानते हैं? यदि हम 'हरे नमः' कहते हुए थक जाएं तो आपको पांच सौ रुपये दक्षिणा देंगे और यदि आप पढ़ते-पढ़ते थक जाएं, तो आपको अपनी डिंग-शास्त्र की पोथी छोड़ कर जाना होगा, मंजूर?'

उसने 'हां' कहते हुए जोड़ा, 'एक शर्त मेरी भी है। अगर मैं जीता, तो दक्षिणा के साथ आप मुझे भागवत का वह ग्रंथ भी देंगे, जो मुझ से पहले वाले पंडित जी छोड़ गये हैं।'

मुखिया के साथ पंच भी बोल उठे, 'मंजूर'।

दूसरे रोज उसने कथा शुरू की। बोले, 'ओम नमः नारायण...विष्णु भगवान गरुड पर सवार हुए। गरुड उनका वाहन है।' गांव वालों ने कहा, हरे नमः।

भगवान ने गरुड से पूछा...'क्या आपकी कोई जात-पांत है?'

हरे नमः।

उत्तर में गरुड ने बताया... 'भगवान, मेरी जाति तो है, लेकिन बिरादरी वालों ने मेरा हुक्का-पानी बंद कर रखा है।'

हरे नमः।

'अब भगवान ने सारे पक्षियों

को इकट्ठा कर एक बोरे में बंद कर दिया।'

हरे नमः।

'बोरे में बंद सारे पक्षी गला फाड़ कर चहचहाने लगे।'

हरे नमः।

'बोरे में एक छेद था।'

हरे नमः।

'छेद में से एक पक्षी बाहर निकला और फुर्र से उड़ गया।'

हरे नमः।

'दूसरा पक्षी निकला और फुर्र से उड़ गया।'

हरे नमः।

'फिर तीसरा निकला और फुर्र से उड़ गया।'

हरे नमः।

'फिर चौथा निकला और फुर्र से उड़ गया।'

हरे नमः।

'फिर पांचवा निकला और फुर्र से उड़ गया।'

हरे नमः।

उसका 'फुर्र'?' और गांव वालों का हरे नमः चलता रहा। आखिर गांव वालों के मुंह दुखने लगे। यही नहीं, हरे नमः के बजाय वे 'फुर्र-फुर्र' बोलने लगे। तभी उसने अपनी पोथी बंद कर घोषणा की, 'आप लोग हार गये। अब दक्षिणा के साथ भागवत की वह पोथी भी मुझे मिलनी चाहिए।'

मुखिया से भागवत और पांच सौ रुपये दक्षिणा ले कर वह वापस घर आया और अपने छोटे भाई को उसकी पोथी सौंप दी।

रंग-बिरंगी मुर्गी

एक था अधेड़ मुर्गा और एक थी उसकी बूढ़ी बीवी। फिर भी उस मुर्गे ने एक जवान मुर्गी से ब्याह रचाया। इस कारण उसकी बीवी रूठ कर नीम के पेड़ पर जा बैठी। तभी बारिश होने लगी। जिस डाल पर वह बैठी थी, उस पर कौए का घोंसला था। घोंसले में रंग-बिरंगी चिड़ियां थी। बारिश के कारण चिड़ियों के रंग वाला पानी बूढ़ी मुर्गी पर टपकने लगा। इससे उसके पंख चमकीले रंगों से रंग गये। अब वह जवान दिखने लगी। उसकी ठसक भी बढ़ गई। वह इठलाती हुई अपनी सौतन के पास पहुंची। सौतन ने पूछा, 'जरा यह तो बताओ,

तुमने अपने पंख इतने सुंदर कैसे बनाये?'

बूढ़ी मुर्गी झल्लाई हुई थी ही, इसलिए उसने झूठ कहा, 'मैंने तो रंगरेज के रंग भरे पीपे में एक डुबकी लगाई थी। तुम्हें अपने पंख चमकीले बनाने हो, तो तुम भी रंग के पीपे में छलांग लगा दो।'

जवान मुर्गी थी मूर्ख। वह रंगरेज की दुकान पर पहुंची और पीपे में कूद पड़ी। देखते ही देखते वह डूब कर मर गई। यह खबर सुन कर मुर्गा बहुत दुखी हुआ। वह मुंह लटकाये पीपल के पेड़ पर बैठ गया। पीपल ने पूछा, 'मुर्गे मियां, मुर्गे मियां। आज आप उदास क्यों हो?'

मुर्गा बोला...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में।

पीपल ने कहा, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और उसने अपने सारे पत्ते झाड़ डाले। थोड़ी देर बाद पीपल की छांव में बैठने एक भैंस आयी। हैरान हो कर वह बोली, 'पीपल भैया, पीपल भैया। यह कैसा गजब हो गया। कल तो तुम पर हरी-हरी पत्तियों की सजावट थी और आज पीला पत्ता तक नहीं।' पीपल बोला, 'बात ही कुछ ऐसी है।' भैंस ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

पीपल को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
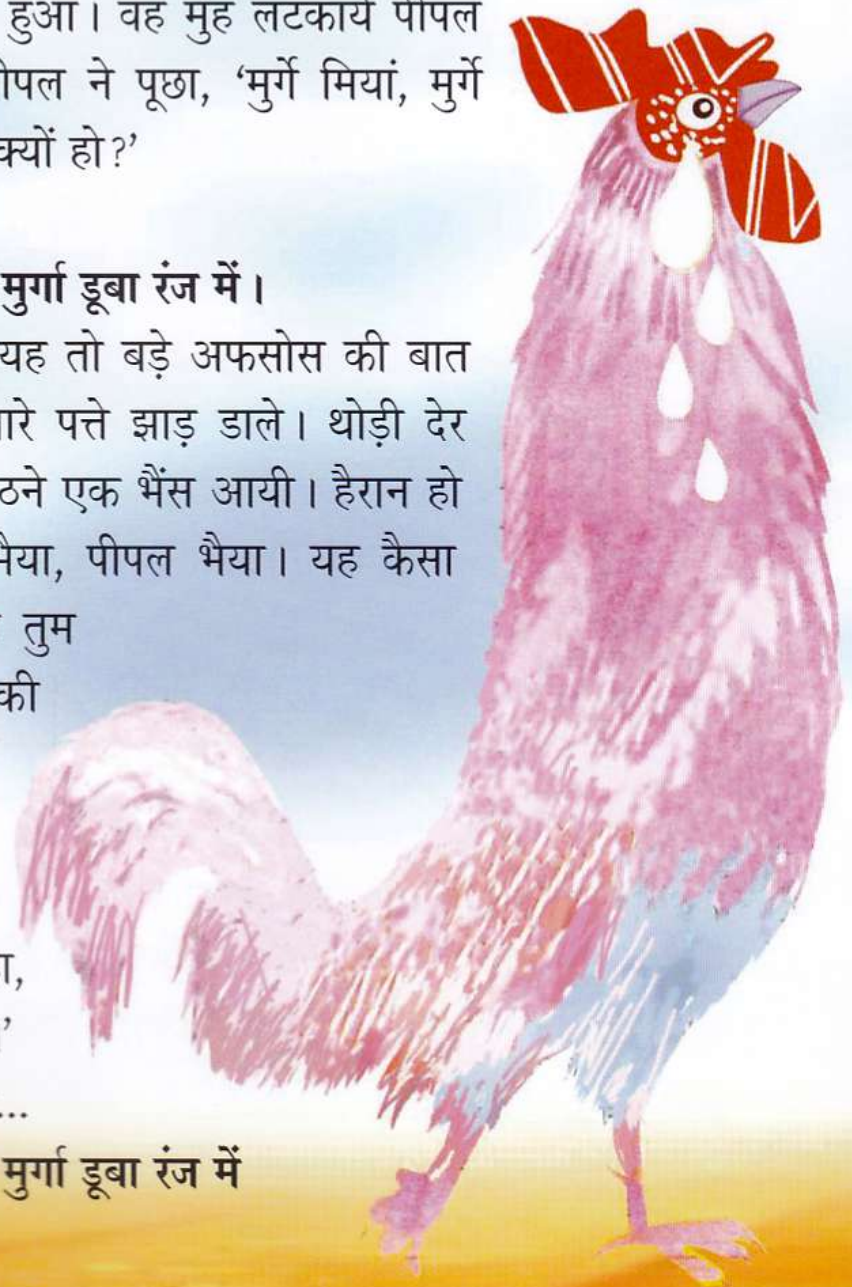
और पत्ते पीपल के झड़े।

भैंस ने कहा, 'अरे यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और उसके दोनों सींग सड़ कर गिर गए। फिर भैंस पानी पीने नदी पर गई। नदी ने पूछा, भैंस मामी, भैंस मामी। यह क्या हो गया? सिर से सींग ही गायब!' 'भैंस बोली, बात ही कुछ ऐसी है।' नदी ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।' भैंस को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े और सींग भैंस के सड़े।

नदी ने कहा, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और उसने अपना सारा पानी बादलों को पिला दिया। तभी एक कोयल पानी पीने नदी पर आयी।

नदी तो सूखी थी। हैरान हो कर वह बोली, 'नदी दीदी, नदी दीदी। यह मैं क्या देख रही हूं?'

नदी बोली, 'बात ही कुछ ऐसी है।'

कोयल ने कहा, 'बताओ तो हम भी जानें।'

नदी को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
और नदी हुई प्यासी।

कोयल ने कहा, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और वह उदास हो गई।

फिर वहां से उड़ कर बनिये की दुकान पर पहुंची। बनिया उसकी मरियल सूरत

देख बोला, 'कोयल बिटिया, कोयल बिटिया। यह क्या हो गया? तुम उदास कैसे हो गई?'

कोयल बोली, 'बात ही कुछ ऐसी है।' बनिये ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

कोयल को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
नदी हुई प्यासी और कोयल पर छायी उदासी।

बनिये ने कहा, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और वह नीम पागल हो गया। उसी रोज राजमहल से एक चाकर बेसन खरीदने बनिये की दुकान पर आया। उसने देखा कि बनिया पागलों-सी हरकत कर रहा है।

'सेठजी, सेठजी।' चाकर ने पूछा, 'आज आपकी एक आंख पूरब और दूसरी पच्छम में क्यों देख रही है?'

बनिया बोला, 'बात ही कुछ ऐसी है।'

चाकर ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

बनिये को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
नदी हुई प्यासी, कोयल पर छायी उदासी
और बनिया हो गया भेंगा।

चाकर बोला, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और राजमहल पहुंच वह माथे पर हाथ धर बैठ गया। दासी ने उसे मूढ की तरह बैठा देख पूछा, 'चाकर भैया, चाकर भैया। क्या तुम पर आकाश टूट

पड़ा या धरती फट गई?'

चाकर बोला, 'बात ही कुछ ऐसी है।'

दासी ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

चाकर को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
नदी हुई प्यासी, कोयल पर छायी उदासी
बनिया हो गया भेंगा और चाकर दिखावे ठेंगा।

दासी बोला, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और वह अपने ही बाल नोचने लगी। सिर पीटने लगी। तभी वहां से रानी गुजरी। उसे विलाप करते हुए देख पूछा, 'दासी, दासी। क्या तुम्हारे घर किसी की खटिया खड़ी हो गई?'

दासी बोली, 'बात ही कुछ ऐसी है।'

रानी ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

दासी को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
नदी हुई प्यासी, कोयल पर छायी उदासी
बनिया हो गया भेंगा, चाकर दिखावे ठेंगा
और दासी रोये झार-झार।

रानी बोली, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और वह नाचने लगी। क्योंकि नाचने से दुख को भुलाया जा सकता है। उसे नाचती देख राजकुमार सोच में पड़ गया। फिर पूछा, 'माता जी, माता जी। आपको क्या हो गया है? आप क्यों डिस्को कर रही हैं?'

रानी बोली, 'बात ही कुछ ऐसी है।'

राजकुमार ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

रानी को बताना पड़ा...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
नदी हुई प्यासी, कोयल पर छायी उदासी
बनिया हो गया भेंगा, चाकर दिखावे ठेंगा
दासी रोये झार-झार और रानी नाचे बार-बार।

राजकुमार बोला, 'अरे, यह तो बड़े अफसोस की बात है।' और वह ढोलक बजाने लगा। इसी बीच राजा को पता चला, तो वह भी आ पहुंचा। देखा, राजकुमार ढोलक बजा रहा है, रानी डिस्को कर रही है।

उससे रहा नहीं गया। वह चिल्लाया, 'यह मेरा परिवार है या किसी भांड का?'

राजकुमार ने कहा, 'बात ही कुछ ऐसी है।'

राज ने कहा, 'बताओ तो हम भी जाने।'

राजकुमार को बताना पड़ा। सारी बात जानने के बाद राजा ताली बजाने लगा। फिर तो सब मिल कर नाचने लगे, गाने लगे, तालियां बजाने लगे...

मुर्गी पड़ी रंग में, मुर्गा डूबा रंज में
पत्ते पीपल के झड़े, सींग भैंस के सड़े
नदी हुई प्यासी, कोयल पर छायी उदासी
बनिया हो गया भेंगा, चाकर दिखावे ठेंगा
दासी रोये झार-झार, रानी नाचे बार-बार
राजकुमार ढोलक पीटे और राजा दे ताली।
ले ताली दे ताली ले ताली...

पांचवा चूहा

एक नाली में पांच चूहे रहते थे। उनमें से एक चूहे की पूंछ लंबी होते-होते गज भर की हो गई। यह देख बाकी चार चूहों ने उसके साथ खेलने से इंकार कर दिया।

'भला क्यों?' लंबी पूंछ वाले चूहे ने पूछा।

'इसलिए कि तेरी लंबी पूंछ में हमारी टांग फंस जाती है और हम धड़ाम से गिर पड़ते हैं।' चार में से एक चूहे ने बताया।

'जा, तू इसे कटवा कर आ। फिर हमारे साथ खेलना।'

अपनी पूंछ कटवाने के लिए वह एक सुनार की दुकान पर पहुंचा, 'सुनार जी,
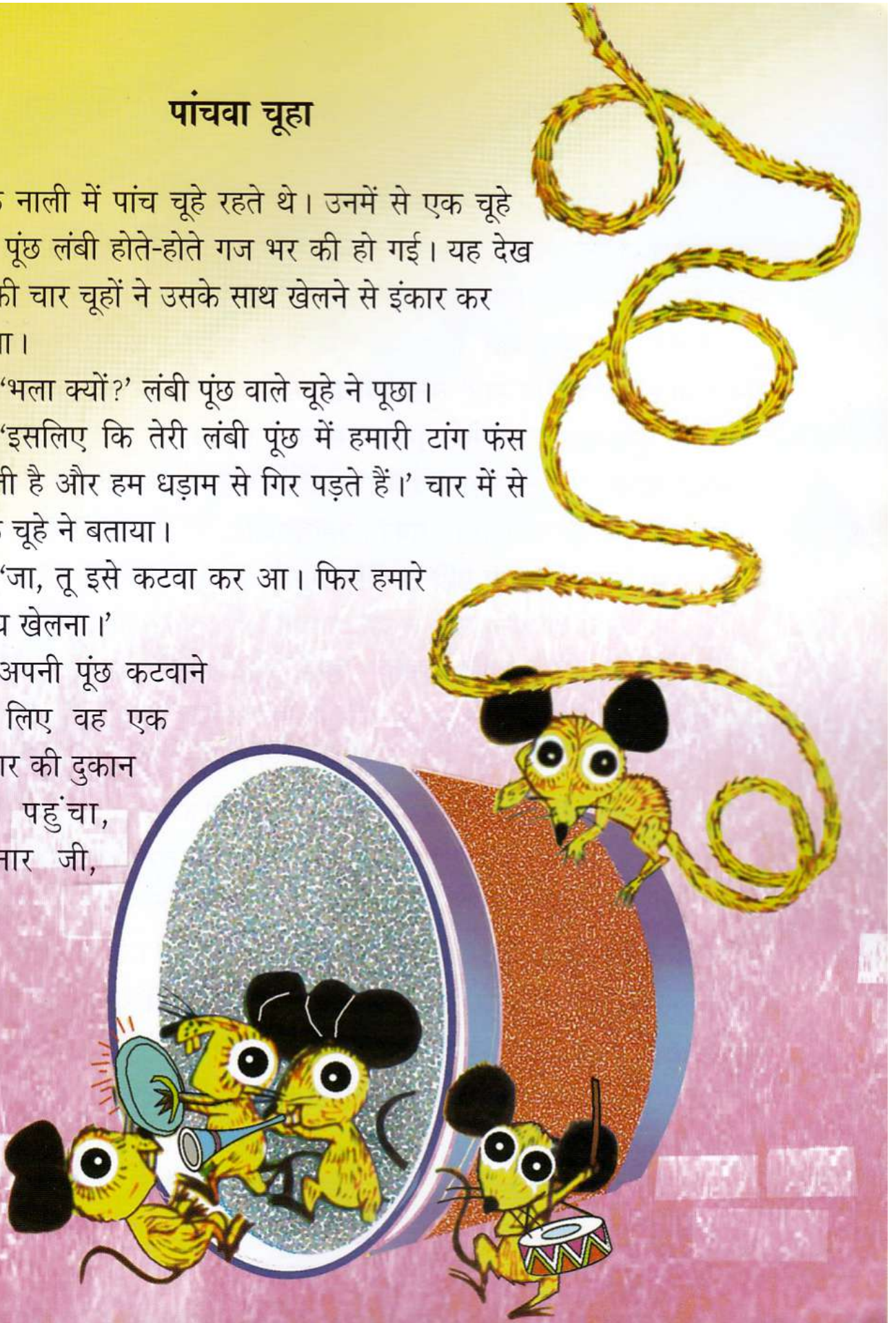
सुनार जी। क्या कर रहो हो?' सुनार बोला, 'मक्खियां मार रहा हूं।' चूहा तुरंत बोला, 'तब मेरी यह पूंछ काट दो न।' सुनार ने उसकी पूंछ काट कर छोटी कर दी। पूंछ कटवा कर चूहा नाली में लौटा।

साथियों ने कहा, 'तेरी पूंछ से तो अभी भी खून टपक रहा है। हम तेरे साथ कैसे खेलें? जा, अपनी पूंछ फिर से लगवा कर आ।'

वह चूहा फिर एक बार सुनार की दुकान पर पहुंचा। बोला, 'सुनार जी, सुनार जी। क्या कर रहे हो?' सुनार बोला, 'छड़ी को रंग रहा हूं।'

चूहे ने तुरंत कहा, 'तब मेरी पूंछ वापस लगा दो न।'

सुनार बोला, 'यह तो बड़ा मुश्किल काम है।'

यह सुन कर चूहे का माथा ठनका। वह बमका...

पूंछ लगा दो वरना छड़ी ले कर भागूंगा
पूंछ लगा दो वरना छड़ी ले कर भागूंगा

सुनार सोचता रहा और चूहा उसकी छड़ी उठा कर चल दिया। चलते-चलते वह एक बुढ़िया के घर पहुंचा। तब बुढ़िया अपनी खड़ाऊं जला कर रसोई बनाने जा रही थी।

चूहे ने पूछा, 'मां जी, मां जी। यह क्या कर रही हो?'

बुढ़िया बोली, 'बेटा, मेरे पास लकड़ी नहीं है।' चूहा तुरंत बोला, 'तो क्या हुआ? मेरे पास तो है।'

उसने अपनी छड़ी बुढ़िया को दी। बुढ़िया खुश हो गई। उसने चूल्हे में से खड़ाऊं निकाल कर लकड़ी डाली और रोटी पकाने लगी। चूहा खेलने चला गया। थोड़ी देर बाद वह लौटा और बुढ़िया से बोला, 'मां जी, मां जी। मेरी छड़ी दो।' बुढ़िया ने कहा, 'माटी मिले, छड़ी तो राख हो गई।'

यह सुन कर चूहे का माथा ठनका। वह धमका...

मेरी छड़ी दो वरना रोटी ले कर भागूंगा

मेरी छड़ी दो वरना रोटी ले कर भागूंगा

बुढ़िया सोचती रही और चूहा रोटी उठा कर चल दिया। चलते-चलते वह एक कुम्हार के घर पहुंचा। कुम्हार बैठा-बैठा कुछ खा रहा था।

चूहे ने उससे पूछा, 'कुम्हार जी, कुम्हार जी। यह क्या खा रहे हो?'

'घास।' वह बोला, 'वक्त बहुत बुरा चल रहा है।'

चूहे ने कहा, 'कभी धूप-कभी छांव। इसी का नाम जीवन है। लो, यह रोटी खाओ।'

कुम्हार खुश हो गया। वह घास-पूस छोड़ रोटी खाने लगा।

चूहा कुछ देर गांव में टहल कर लौटा, तब कुम्हार डकार ले रहा था। चूहा बोला, 'कुम्हार जी, कुम्हार जी, मेरी रोटी वापस दो।'

कुम्हार ने कहा, 'वापस कैसे दूं? वह तो मैं खा गया।'

यह सुन कर चूहे को माथा ठनका। वह बमका...

मेरी रोटी दो वरना गगरी ले कर भागूंगा
मेरी रोटी दो वरना गगरी ले कर भागूंगा

कुम्हार सोचता रहा और चूहा उसकी गगरी उठा कर चल दिया। चलते-चलते वह एक ग्वालन के घर पहुंचा। ग्वालन ओखली में दूध दुह रही थी। चूहे ने उससे पूछा, 'बहना, बहना। यह क्या कर रही हो?'

ग्वालन बोली, 'भैया, क्या करूं? हंडिया चोरी हो गई, इसलिए ओखली में दूध दुह रही हूं!'

चूहे ने कहा, 'यह गगरी कब काम आएगी? बहना इसी में दूध दुहो न।' ग्वालन प्रसन्न हो गई।

ओखली एक ओर रख कर वह गगरी में दूध दुहने लगी। दुहते-दुहते गगरी फिसल कर फूट गई।

तभी चूहा, जो मेले में घुमने गया था आ पहुंचा। उसने कहा, 'बहना, बहना, मेरी गगरी दो।'

ग्वालन बोली, 'करमजले, गगरी तो फूट गई और सारा दूध भी बह गया।'

यह सुन कर चूहे का माथा ठनका। वह बमका...

मेरी गगरी दो वरना भैंस ले कर भागूंगा
मेरी गगरी दो वरना भैंस ले कर भागूंगा

ग्वालन सोचती रही और चूहा भैंस ले कर चल दिया। चलते-चलते वह उस मैदान में पहुंचा, जहां कुछ नट खेल दिखा रहे थे।

चूहे ने कहा, 'नटराज, नटराज। तुम क्या कर रहे हो?'

एक नट बोला, 'भैया, हम तो अपना करतब दिखा रहे है।'

चूहे ने कहा, 'मेरी यह भैंस खिलाड़ी नंबर वन है।'

नट बोला, 'तब इसे यहीं छोड़ दो न!'

नट को भैंस सौंप कर चूहा कबड्डी खेलने चला गया। नट ने भैंस को रस्सी पर चढ़ाया। लेकिन भैंस मुंह के बल गिर कर मर गई।

तभी चूहा लौट आया। उसने कहा, 'नटराज, नटराज। भैंस को जिंदा कर दो।'

नट बोला, 'जिसके प्राण पखेरू उड़ जाएं उसे कौन जिंदा कर सकता है, तेरा बाप?'

यह सुन कर चूहे का माथा ठनका। वह बमका...

मेरी भैंस दो वरना ढोलक ले कर भागूंगा
मेरी भैंस दो वरना ढोलक ले कर भागूंगा

नट सोचता रहा और चूहा उसकी ढोलक उठा कर चल दिया। चलते-चलते वह एक ऊंची टेकरी पर चढ़ गया। फिर वहां बैठ कर ढम-ढम ढोल बजाने लगा।

ठुमक-ठुमक नाचने लगा। गाने लगा...

ढोली तारो ढोल बाजे
ढम ढम ढम ढम ढम
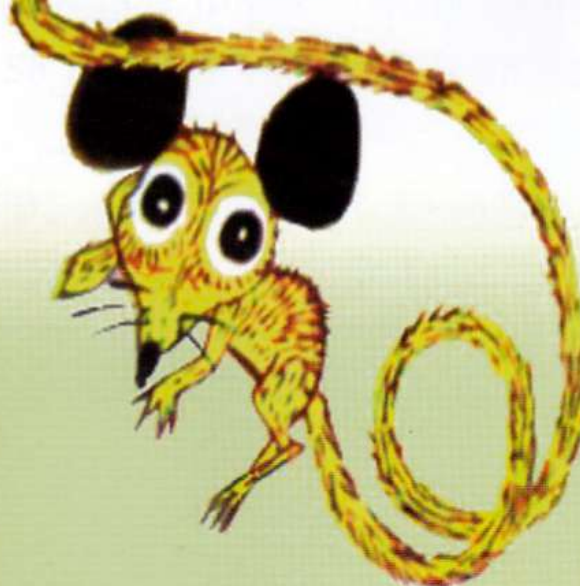
बाऊजी कौआ

एक था बनिया। उसके घर एक बेटा पैदा हुआ। यह बेटा था बड़ा बातूनी। दिन भर बाप का दिमाग चाटता रहता था। वह रोजाना बाप के साथ दुकान पर जाता और कुछ न कुछ सवाल पूछता रहता। बनिया इतने शांत स्वभाव का था कि उसके हर एक सवाल का जवाब शांति से देता। वह अपने लाड़ले को कभी नाराज नहीं करता। कभी उस पर खीजता नहीं था। बाप हमेशा वही करता, जो उसका लाड़ला चाहता।

एक रोज बातूनी बेटा बाप की गोद में बैठा था। दुकान के सामने नीम का एक पेड़ था। उस पर एक कौआ आ कर बैठा और कांव-कांव करने लगा। यह देख बेटा बोला, 'बाऊजी कौआ।'

बाप बोला, 'हां बेटा, कौआ।' बेटे ने फिर बाप का हाथ पकड़ कर कहा, 'बाऊजी कौआ।'

बाप ने फिर जवाब दिया, 'हां बेटा, कौआ।' बेटे ने तीसरी बार कहा, 'लेकिन बाऊजी, कौआ।'

बाप बड़े धैर्य के साथ बोला, 'हां बेटा, कौआ।'

जवाब दे कर बनिये ने थोड़ी देर के लिये दुकान के काम में मन लगाया ही था कि बेटे ने बाप का कंधा झकझोरते हुए कहा, 'बाऊजी...देखो-देखो कौआ।' बनिये ने अपने काम में से ध्यान हटा कर बड़ी शांति के साथ कहा, 'हां बेटा, कौआ।'

बेटा स्वभाव से दिमाग-चाटू था। इसलिए उसे संतोष नहीं हुआ। बनिया फिर से अपनी पोथी में हिसाब लिखने लगा ही था कि बेटे ने उसकी पगड़ी खींचते हुए कहा, 'बाऊजी कौआ।'
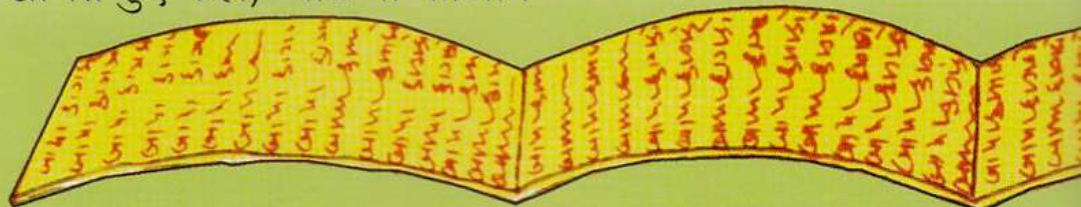
बिना आपा खोए बनिये ने शांति से कहा, 'हां बेटा, कौआ।' बेटा जिद पर चढ़ा और फिर से बोला, 'देखिए तो सही बाऊजी, कौआ।'

बनिये ने बही लिखते-लिखते बेटे की ओर देख कहा, 'हां बेटा, वह कौआ ही है।'

कुछ देर तक लड़का कौए को देखता रहा। फिर एकबारगी सनक सवार हुई। जोर से बाप का कंधा झकझोर कर वह बोला, 'बाऊजी, कौआ।' बनिये ने बिना क्रोधित हुए कहा, 'हां बेटा, कौआ।' इस तरह बेटा बार-बार 'बाऊजी कौआ, बाऊजी कौआ' कहता रहा और बाप 'हां बेटा, कौआ' बोलता गया। आखिर बेटा थक गया। उसने चुप्पी साध ली।

बनिया सयाना था। बेटे ने जब भी 'बाऊजी कौआ' कहा, उसने अपनी बही में जवाब के साथ लिख लिया। जब बेटा थक कर रुक गया तो उसने जोड़ लगा कर देखा। 'बाऊजी
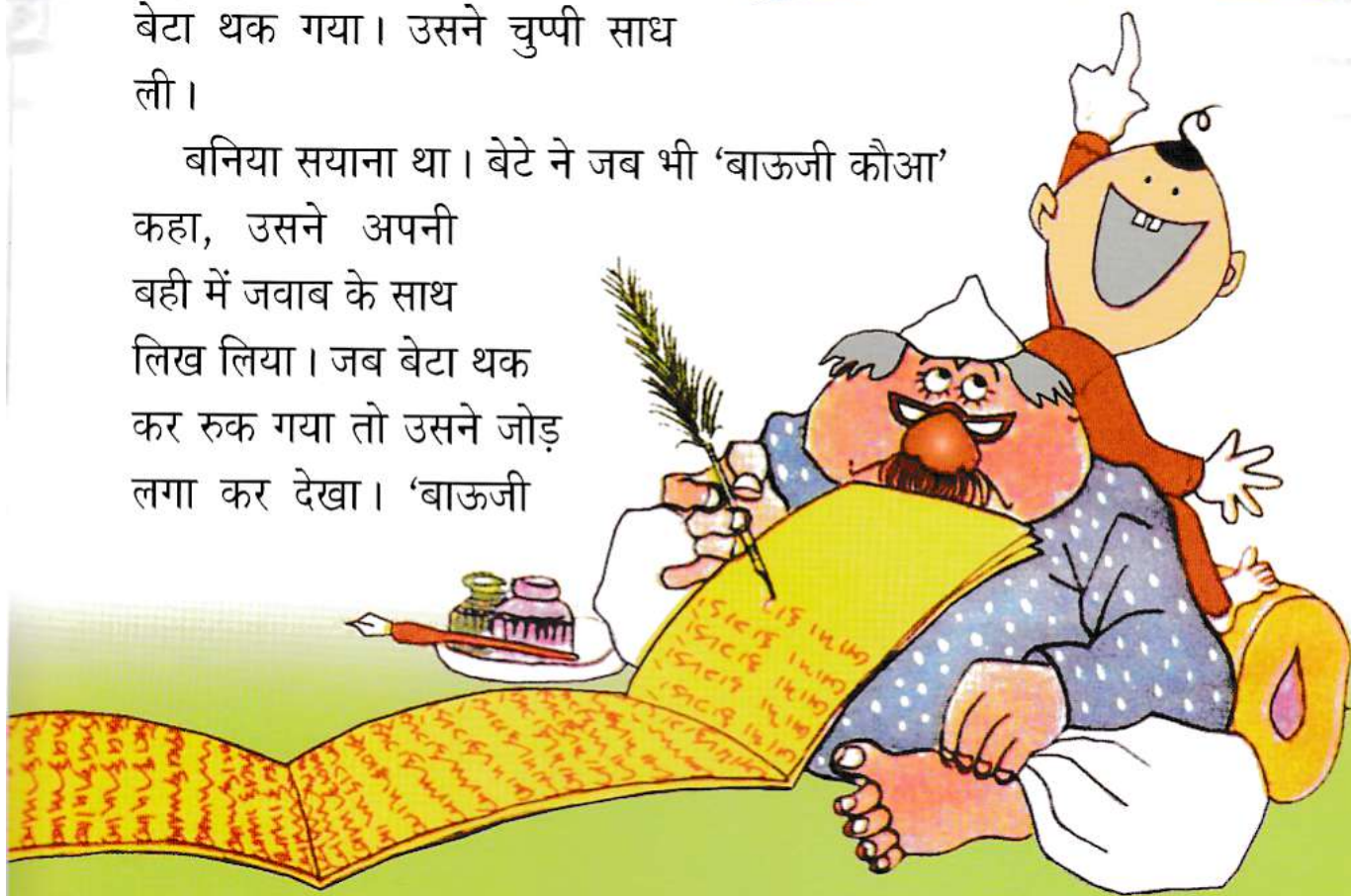
कौआ – हां बेटा, कौआ।' एक सौ एक बार लिखा जा चुका था। यह सोच कर कि आगे कभी यह बही काम आयेगी, चतुर बनिये ने इसे संभाल कर एक पिटारे में रख दी।

इस बात को कई साल गुजर गये। बनिया बूढ़ा हो चुका था और उसका वह बकझक करने वाला बेटा तीस साल का जवान बन गया था। उसका कारोबार सात समंदर पार भी फैल रहा था। अब लोग उसे दिमाग-चाटू नहीं, सेठ दिमागीलाल कह कर आदर से पुकारते थे। फिर भी बनिया बड़ा दुखी था। कारण? उसकी सेवा-टहल करना तो दूर रहा सेठ दिमागीलाल अपनी पत्नी की सीख मान कर मां-बाप पर कहर ढाता था। जब बनिये का दिल भर आया तो उसने सोचा, वह अपने बेटे को याद दिलाए कि उसने कितने लाड़-प्यार से उसको पाला पोसा है।

एक रोज बनिया अपनी लकड़ी के सहारे डग भरता हुआ दुकान पर पहुंचा और फर्श पर बिछी गद्दी पर पालथी लगा कर बैठ गया। उसे आया देख बेटा दिमागीलाल मन ही मन बड़बड़ाया...यह बूढ़ा आज यहां कैसे टपक पड़ा? अब दिन भर फिजूल की बातें करेगा और मेरा सिर खायेगा। हे भगवान, इस बला से मेरी रक्षा करना।

तभी एक कौवा उड़ता हुआ आया और खिड़की पर बैठ गया। अब बनिये ने कहा, 'बेटा कौआ।' दिमागीलाल बूढ़े बाप के शब्दों से चौंक गया। फिर कहा, 'हां बाऊजी, कौआ।' बनिया फिर बोला, 'बेटा कौआ।' दिमागीलाल ने अब तुनक कर जवाब दिया, 'हां बाऊजी, कौआ।'

बनिये ने देखा कि बेटे को गुस्सा आ रहा है, लेकिन वह तो बेटे को सबक सिखाने के लिए ही आया था। इसलिए उसने फिर से कहा, 'बेटा
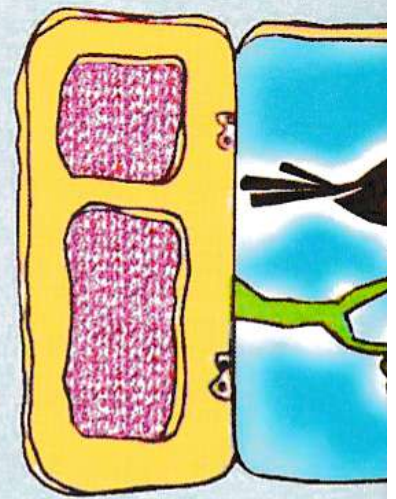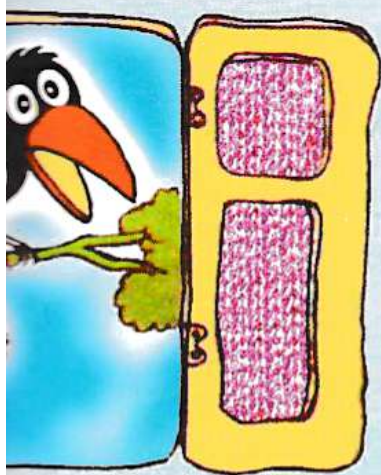
कौआ।' इस बार बेटा झुलस गया और तिलमिला कर बोला, 'हां बाऊजी, कौआ। सारा गांव जानता है कि वह कौआ है। आप बार-बार दोहरा कर मेरा दिमाग क्यों चाटे जा रहे हैं? मुझे अपना काम करने दीजिए।'

दिमागीलाल कुढ़ते हुए अपनी पीठ फेर कर काम में जुट गया। बनिया भी कुछ कम नहीं था। उसने बेटे का हाथ थामा और कौए की ओर इशारा करते हुए कहा, 'बेटा कौआ।' अब दिमागीलाल आपे से बाहर हो गया। उसने सोचा, यह बूढ़ा सठिया गया है। इसके पास न कोई काम है, न काज। इसलिए बकवास किये जा रहा है। इस बार बनिये की ओर देख कर वह चिल्लाया, 'आप घर जाइए बाऊजी। यहां आपका क्या काम है? क्यों काम के वक्त मेरी खोपड़ी खा रहे है?'

उत्तर में बनिये ने मुस्कुरा कर यही कहा, 'बेटा कौआ।'

'कौआ, कौआ, कौआ। और कितनी बार आप यह जाप जपेंगे? इस कौए में ऐसी क्या बात है कि आप अपना चरखा चलाए जा रहे है?' बनिया फिर बोले कि 'बेटा कौआ', दिमागीलाल ने मुनीम को हुकम दिया, 'कौए को खिड़की पर से उड़ा दो।' कौआ उड़ गया। फिर भी दिमागीलाल बड़बड़ाता रहा, 'साठ के होने पर बूढ़े लोग सचमुच सठिया जाते है। इस बूढ़े की अकल तो बिल्कुल मारी गयी है। अब तो यह सिधार जाएं तो छुटकारा हो।'

बनिये ने यह सुना तो उसकी आंखों मे आंसू आ गये। उसने चपरासी को बुला कर वह पुरानी बही निकलवाई और बेटे के हाथ में वह पन्ना रखा, जिसमें 'बाऊजी कौआ – हां बेटा कौआ' सौ बार लिखा था। पास बैठे मुनीम ने बेटे दिमागीलाल को उसके बचपन की सारी बातें ब्योरेवार कह सुनाई। दिमागीलाल तुरंत समझ गया। उसने बाप से क्षमा मांगी और उस दिन से वह तन-मन से अपने माता-पिता की सेवा करने लगा।
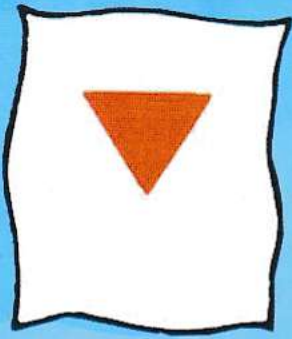
तेईस बेटों की मां

एक थी बुढ़िया। उसके तेईस बेटे थे। एक दिन बेटे तीर्थयात्रा पर निकले। चलते-चलते रास्ते में एक किला आया। किले के बुर्ज तले सब खाना खाने बैठे। यह किला न सिर्फ पुराना था, बल्कि जर्जर हालत में भी था। तभी बुर्ज धंस गया और उसके मलबे तले सात भाई दब के मर गये।

जो बचे वे आगे बढ़े। रास्ते में एक नदी थी। बारिश के दिन थे। नदी में बाढ़ आई हुई थी। फिर भी वे नदी

पार करने गये और नौ भाई पानी में डूब गये।

जो बचे सो आगे बढ़े। मार्ग में बासी चाट खाने के कारण तीन भाईयों को पतले दस्त लगे और वे भी मसान पहुंच गये। जो बचे सो आगे बढ़े।

चलते-चलते वे एक गांव पहुंचे। तभी कहीं से एक बदहवास सांड़ आया और उसने दो भाईयों को हमेशा के लिए सुला दिया।

जो बचे सो आगे बढ़े। तीर्थधाम पहुंचने पर बड़के को बुखार आया और तीन दिनों में उसकी खटिया भी खड़ी हो गई। अंत में एक बेटा, जो जिंदा बचा था, घर वापस आया। उसे अकेला लौटा देख मां बौखला गई।

मां ने पूछा, 'बेटा, आखिर क्या है बात?'

लड़का बोला, 'मां जी, बुर्ज ने दबाए सात।'

मां ने कहा, 'क्या बोलता तू, पाजी।'

लड़का बोला, 'नौ को घसीट गई नदी, मां जी।'

मां ने कहा, 'अब कैसे उतरेगा हलक से खाना?'

लड़का बोला, 'तीन को लील गया पाखाना।'

मां ने कहा, 'यह हो गया गजब कैसा?'

लड़का बोला, 'दो को लिटा गया एक भैंसा।'

मां ने कहा, 'फिर भी बचा है एक लड़का।'

लड़का बोला, 'जिसे मलेरिया ने मारा वह था बड़का।'

मां ने कहा, 'हाय...सब गये मर।'

लड़का बोला, 'मैं तो आया घर।'

सिरफिरा सियार

एक था मुर्गा और एक था सियार। दोनों नये-नये दोस्त बने थे। दोनों के आंगन में बेर का एक-एक पेड़ था। मुर्गा अपने पेड़ को रोज पानी देता, लेकिन सियार अपने पेड़ पर रोजाना थूकता। नतीजतन उसका पेड़ सूख गया और मुर्गे के पेड़ में बढ़िया मीठे बेर लगे।

एक रोज मुर्गा अपने पेड़ से तोड़ कर बेर खा रहा था, तभी वहां से सियार गुजरा।

उसने कहा, 'मुर्गे भैया, मुर्गे भैया, मुझे भी बेर दो न।'

मुर्गा बोला, 'भला मैं तुम्हें बेर क्यों दूं?' सियार ने कहा, 'क्योंकि तुम मेरे दोस्त हो।' मुर्गा बोला, 'जो नाकार एक पेड़ की देखभाल नहीं

कर सकता उसका दोस्त कोई नहीं होता।' उस दिन मन ही मन भुनभुना कर सियार वहां से चला गया।

एक रोज मुर्गा कहीं सैर करने गया था, तब सियार उसके घर पहुंचा और पेड़ पर चढ़ कर सारे बेर खा गया। दो घंटे बाद मुर्गे ने आ कर देखा, तो वह समझ गया।

वह तुरंत सियार के घर पहुंचा और उसकी खबर ली, 'मेरे पेड़ के बेर तुमने क्यों खाये?'

सियार हंस कर बोला, 'क्योंकि वह मीठे थे।'

मुर्गे ने कहा, 'तुम-सा बेशर्म मैंने आज तक नहीं देखा।' सियार गुर्राया, 'ज्यादा टांय-टांय फिस-फिस करोगे तो मैं तुमको भी खा जाऊंगा।' यह कह कर वह मुर्गे पर लपका और उसे खा गया।

अब सियार तन कर आगे बढ़ा। रास्ते में उसे एक बुढ़िया मिली। सियार ने कहा, 'दुर्गा माई, दुर्गा माई, मुझे अपनी छड़ी दो।'

बुढ़िया बोली, चल रे मुए, रास्ता नाप। वरना इसी छड़ी से ऐसा मारूंगी कि नानी याद आ जाएगी।'

सियार बोला :

ढेरों खाये कच्चे बेर
सेरों खाये पक्के बेर
खाया एक तगड़ा मुर्गा
अब खाऊंगा तुझे दुर्गा

यह कह कर सियार बुढ़िया का कलेवा कर गया। अब वह रौब जमाता हुए आगे बढ़ा। रास्ते में उसे एक किसान मिला। नाम था फसलू काका।

सियार बोला, 'फसलू काका, फसलू काका, मुझे रोटी खिलाओ।' किसान बमका , 'रोटी खानी है तो मेहनत की खा, हराम की नहीं। अब

टल यहां से, वरना यह हल मैं तुझ पर ही चला दूंगा।'

सियार डंटा रहा। फिर बोला,

ढेरों खाये कच्चे बेर
सेरों खाये पक्के बेर
खाया एक तगड़ा मुर्गा
खायी एक माई दुर्गा
खाऊंगा अब तुझको भी

यह कह कर सियार ने अपने जबडे खोले और उस किसान को भी निगल गया। वहां से सियार शिकारी के टोले में पहुंचा और एक शिकारी से कहा, 'शिकारी भैया,शिकारी भैया, मुझे बढ़िया हड्डी दो।' शिकारी ने सोचा, कौन मुंह लगे ऐसे सिरफिरे सियार के! उसने एक हड्डी उछाल दी। सियार एक पेड़ की छांव में बैठ हड्डी खाने लगा। जाने कैसे हड्डी उसके गले में फंस गई और वह मर गया।

जब चमार को पता चला, तो उसने सियार का पेट चीरा। चीरते ही पेट में से ढेरों बेर, बांग देता हुआ मुर्गा, बड़बड़ाती हुई बुढ़िया और मुस्कुराता हुआ किसान, सब बाहर निकल आए। अंत में सब ने शिकारी का आभार माना और अपने-अपने घर चले गये।

अनोखी मां

एक था बनिया। उसके हाथ में एक फोड़ा हुआ। बनिया रोज वैद्य के घर जाता और दवा लगवाता। पर फोड़ा था जिद्दी। फूट ही नहीं रहा था। एक दिन बनिया दवा लगवाने जा रहा था कि रास्ते में उसे एक चील मिली।

चील ने पूछा, 'अरे, तुम्हारे हाथ पर यह क्या हुआ है?'

बनिया बोला, 'अब क्या बताऊं, कई दिनों से यह फोड़ा परेशान कर रहा है। न पकता है, न फूटता है।'

चील ने कहा, 'चिंता की कोई बात नहीं। इस फोड़े को मैं फोड़ दूंगी, लेकिन एक शर्त पर। इस में से जो भी निकले, वह मेरा होगा।'

बनिया सोचने लगा...भला फोड़े में से क्या निकल सकता है? मवाद और पीव। चाहे जितना ले ले। यह सोच कर उसने हामी भर दी। चील ने तुरंत चोंच मार कर

फोड़े को फोड़ डाला। तभी एक चमत्कार हुआ। फोड़े में से पीव के बजाय एक सुंदर लड़की निकली। बनिये ने बहुत चाहा कि वह अपने वादे से मुकर जाए, लेकिन करता क्या? वह था जबान का पक्का।

आखिर दुखी मन से उसने चील को लड़की सौंप दी। चील लड़की को ले कर उड़ी और अपने घोंसले में उसे रख दिया। चील ने उसका नाम रखा पिंकी। बड़े लगन से चील उसका लालन-पालन करने लगी। वह उसे रोज नये-नये पकवान खिलाती और तरह-तरह के जेवरों से सजाती। पिंकी को किसी बात की कमी नहीं होने देती।

एक दिन पिंकी ने कहा, 'मम्मी, मुझे चंदन हार चाहिए।'

चील बोली, 'वह तो किसी राजा के महल या महाजन की हवेली में ही मिल सकता है। लाने में मुझे देर हो तो चिंता नहीं करना। दो-तीन दिनों में लौट आऊंगी।'

यह कह कर चील चंदन हार की तलाश में उड़

चली। एक दिन बीता, दो दिन बीते, हफ्ता भर गुजर गया, लेकिन चंदन हार कहीं नहीं मिला। अब चील वापस कैसे आती? पिंकी घोंसले में बैठी-बैठी चील-मां की बाट जोहती रही। मम्मी आज आएगी, कल आएगी। वह सोच रही थी। तभी शिकार के लिए निकला हुआ एक राजकुमार वहां आ पहुंचा! पहली नजर में पिंकी उसे भा गई। वह उसे घोड़े पर बिठा कर अपने महल में ले आया।

इसके दो दिन बाद चील चंदन हार ले कर लौटी। देखा तो घोंसला खाली। वह सोचने लगी...मेरी लाड़ली कहां गई होगी? उसने आवाज दी। बार-बार पुकारा। पिंकी हो तो जवाब दे, न। चील रोने लगी। बुक्का फाड़ कर रोने लगी। घंटों रोई। उसे क्या पता, पिंकी तो राजमहल में राजकुमार के साथ हंसती थी, गाती थी और मौज मनाती थी। चील रो-रो कर थक गई। फिर उसने सोचा, रोने से किसका भला हुआ है? चल कर अपनी बिटिया को खोजूं। शायद मिल जाए। चील उड़ी। वह हर घर के छप्पर पर बैठती और दुहाई देती...

कोई तो बताओ, कहां है मेरी आंखों का तारा
कोई तो बताओ, कहां है मेरी बिटिया सयानी
कोई तो बताओ, कहां है मेरी परियों की रानी

चील गांव-गांव घूमती, छप्पर-छप्पर पर बैठती और आवाज लगाती। घूमती-फिरती आखिर वह उस गांव पहुंची, जहां पिंकी रहती थी। वह राजमहल के ही झरोखे पर बैठ कर पुकारने लगी...

कोई तो बताओ, कहां है मेरी आंखों का तारा
कोई तो बताओ, कहां है मेरी बिटिया सयानी
कोई तो बताओ, कहां है मेरी रूप की रानी

उस समय पिंकी सोने के झूले पर बैठ झूल रही थी। उसने यह आवाज

सुनी। वह चौंक गई। तुरंत उसने एक दासी से कहा, 'जरा देखो, कौन पुकार रहा है?'

तभी चील फिर से बोली...

कोई तो बताओ, कहां है
मेरी आंखों का तारा
कोई तो बताओ, कहां है
मेरी बिटिया सयानी
कोई तो बताओ, कहां है
मेरी रूप की रानी

पिंकी समझ गई। वह बोल पड़ी, 'अरे, यह तो मेरी मम्मी है!'

तब दासी आ कर बताया, 'रानी जी, यह आवाज तो एक चील की है। झरोखे पर बैठी है।' पिंकी ने तुरंत कहा, 'वही तो मेरी मां है। उसे फौरन यहां ले आओ।'

सिपाही झरोखे में गये और वहां बैठी चील को पकड़ कर रनीवास में ले आये। अपनी बिटिया रानी को सुखी देख चील मारे खुशी के पगला गई। मां-बेटी दोनों एक दूसरे से लिपट गईं। पिंकी ने अपनी मां के लिए सोने का एक पिंजरा बनवाया और अव वह भी राजमहल में बेटी के साथ रहने लगी।

मैमने

जंगल में एक बकरी कुटिया बना कर रहती थी। उस के सात बच्चे थे। वह चरने जाती, तब बच्चों को याद दिलाती, 'कोई अजनबी आए तो किवाड़ नहीं खोलना। मैं आ कर सुर ताल में कहूंगी... क्या?'

किवाड़ खोलो रे खोलो बचुआ
तुम्हारी मां आई रे आई बचुआ
दूध पिलाएगी खाना खिलाएगी तुमको
लोरी सुनाएगी रे बचुआ

'जब मैं यह गीत गाऊं तभी तुम दरवाजा खोलना समझे?'

बच्चे समझदार थे। एक सुर में
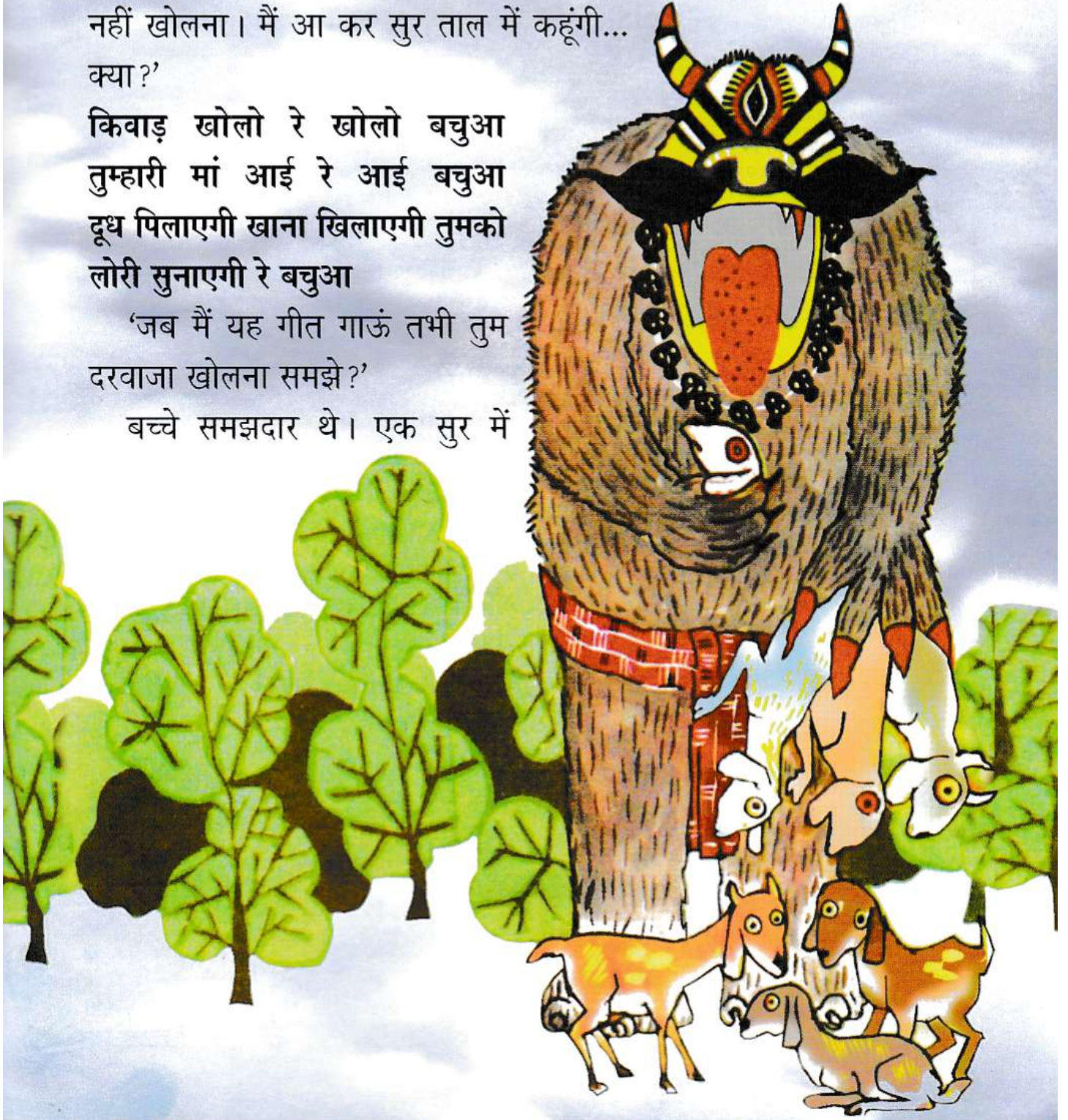
बोले, 'समझ गए।' कुटिया के पास ही बरगद का एक पेड़ था। आगे बढ़ने से पहले बकरी उससे भी प्रार्थना करती, 'बरगद दादा, मेरे बच्चों का खयाल रखना। कोई गैर आए तो चेता देना।' बकरी घर से निकलते ही बरगद से निवेदन करना नहीं भूलती। वह शाम को लौटती, तब अपनी मीठी आवाज में गाती...

किवाड़ खोलो रे खोलो बचुआ
तुम्हारी मां आई रे आई बचुआ
दूध पिलाएगी खाना खिलाएगी
तुमको लोरी सुनाएगी रे बचुआ

एक दिन की बात है। बकरी हमेशा की तरह बच्चों को समझा कर और बरगद दादा से प्रार्थना कर चरने गई। वहां एक राक्षस मौजूद था। उसने कुटिया के पिछवाड़े छिप कर सारी बात सुन ली थी। जैसे ही बकरी वहां से गई कि वह तुरंत किवाड़ के पास आया और आवाज बदल कर बोला...

किवाड़ खोलो रे खोलो बचुआ
तुम्हारी मां आई रे आई बचुआ
दूध पिलाएगी खाना खिलाएगी
तुमको लोरी सुनाएगी रे बचुआ

बच्चे समझे कि मां आई होगी। वे जैसे ही किवाड़ खोलने दौड़े कि बरगद बोल उठा...

मत खोलो रे किवाड़ बचुआ
द्वार पे खड़ा है राक्षस बचुआ
खा जाएगा तुम्हें चबा जाएगा
कलेवा कर जाएगा रे बचुआ

बच्चे सावधान हो गये। राक्षस आग बबूला हो गया। उसने एक पांव

पछाड़ा। फिर दूसरा पछाड़ा और दोनों हाथों से बरगद के पेड़ को उखाड़ कर फेंक दिया। अब उसने एक लात किवाड़ पर जमाई। किवाड़ टूट गया। वह अंदर आया और सातों बच्चों को सचमुच खा गया। शाम में बकरी लौटी और...

किवाड़ खोलो रे खोलो बचुआ
तुम्हारी मां आई रे आई बचुआ
दूध पिलाएगी खाना खिलाएगी
तुमको लोरी सुनाएगी रे बचुआ

तभी उसे खयाल आया। कुटिया का किवाड़ तो टूटा पड़ा है। बरगद दादा को किसी ने उखाड़ फेंका है। उसका दिल धक-धक करने लगा। उसने दो कदम बढ़ा कर भीतर झांका। भीतर तो राक्षस घोड़े बेच कर सो रहा था। उसकी नाक भी बज रही थी।

यह देख बकरी के मुंह से शाप निकल गया। 'जिसने मेरे बच्चों को खाया है, उसका पेट फटे।'

यह कहते ही राक्षस का पेट फट गया। उसमें से बकरी के नन्हे-नन्हे सातों बच्चे फुदकते हुए निकल पड़े। बकरी खुश हो गई। बच्चे भी मां को देख खुश हुए।
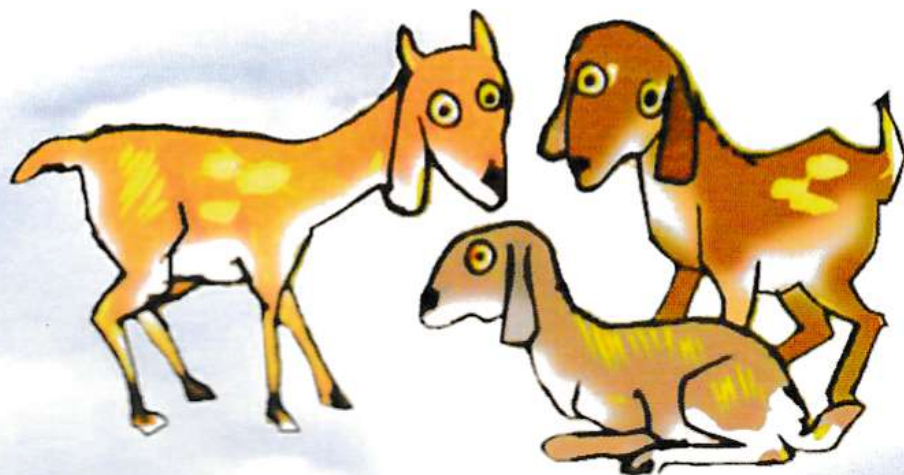
सलमा कबूतरी

एक था कबूतर और एक थी कबूतरी। कबूतर का नाम सलीम था और कबूतरी का सलमा। सलीम रोज महल में दाना चुगने जाता। सलमा उसे मना करती, 'वहां का राजकुमार बड़ा निर्दयी है। किसी रोज आपको मार डालेगा।'

सलीम ऐंठ कर कहता, 'राजकुमार होगा अपने महल का। उसने मेरी ओर उंगली उठायी तो मैं उसकी उंगली ही काट खाऊंगा। वैसे अपनी गली में तो कुत्ता भी शेर होता है।' दूसरे रोज जब सलीम महल में दाना चुगने गया, तो राजकुमार ने छड़ी मार कर उसका एक पंख ही तोड़ डाला। भोजन के समय जब वह घर नहीं लौटा तो सलमा कबूतरी उसकी तलाश मे निकली। सब से पहले वह महल पहुंची। वहां उसने देखा कि सलीम का एक पंख टूटा पड़ा है। वह बोल उठी :

सलीम मियां, रे सलीम मियां
कितना समझाया मैंने आपको

महल में कभी जाना नहीं
राजकुमार है निर्दय बड़ा
खेल-खेल में वह मारेगा
पंख तुम्हारे वह तोड़ेगा

सलीम ने जवाब दिया :

सलमा बेगम, रे सलमा बेगम
जाओ, रे जाओ
जाओ अपने घर खिलाओ दाना
पिलाओ बच्चों को पानी
मैं अभी आया मेरी रानी

यह सुन कर राजकुमार को गुस्सा आ गया। उसने कबूतर को ऐसा फटकारा कि उसका जोड़-जोड़ हिल गया। काफी देर बाद भी सलीम घर नहीं आया, तो सलमा कबूतरी फिर से उसे बुलाने आई :

सलीम मियां, रे सलीम मियां
कितना समझाया मैंने आपको
महल में कभी जाना नहीं
राजकुमार है निर्दय बड़ा
खेल-खेल में वह मारेगा
पंख तुम्हारे वह तोड़ेगा

सलीम बोला :

सलमा बेगम, रे सलमा बेगम
जाओ, रे जाओ
जाओ अपने घर खिलाओ दाना
पिलाओ बच्चों को पानी

मैं अभी आया मेरी रानी

राजकुमार यह सुन कर मन ही मन बड़बड़ाया...अरे, यह तो अभी जिंदा है। इसका कचूमर बनाना पड़ेगा। उसने तुरंत तलवार निकाली और कबूतर का कचूमर बना कर कच्चा-कच्चा ही चबा गया। सलमा कबूतरी ने फिर कहा :

सलीम मियां, रे सलीम मियां
कितना समझाया मैंने आपको
महल में कभी जाना नहीं
राजकुमार है निर्दय बड़ा
खेल-खेल में वह मारेगा
पंख तुम्हारे वह तोड़ेगा

तभी राजकुमार के पेट में से आवाज उठी :

सलमा बेगम, रे सलमा बेगम
जाओ, रे जाओ
जाओ अपने घर खिलाओ दाना
पिलाओ बच्चों को पानी
मैं अभी आया मेरी रानी

यह सुन कर राजकुमार भड़क उठा। कबूतर को सजा देने के लिए उसने अपने ही पेट में तलवार दे मारी। पेट फट गया। अंदर से कबूतर निकल कर उड़ गया।
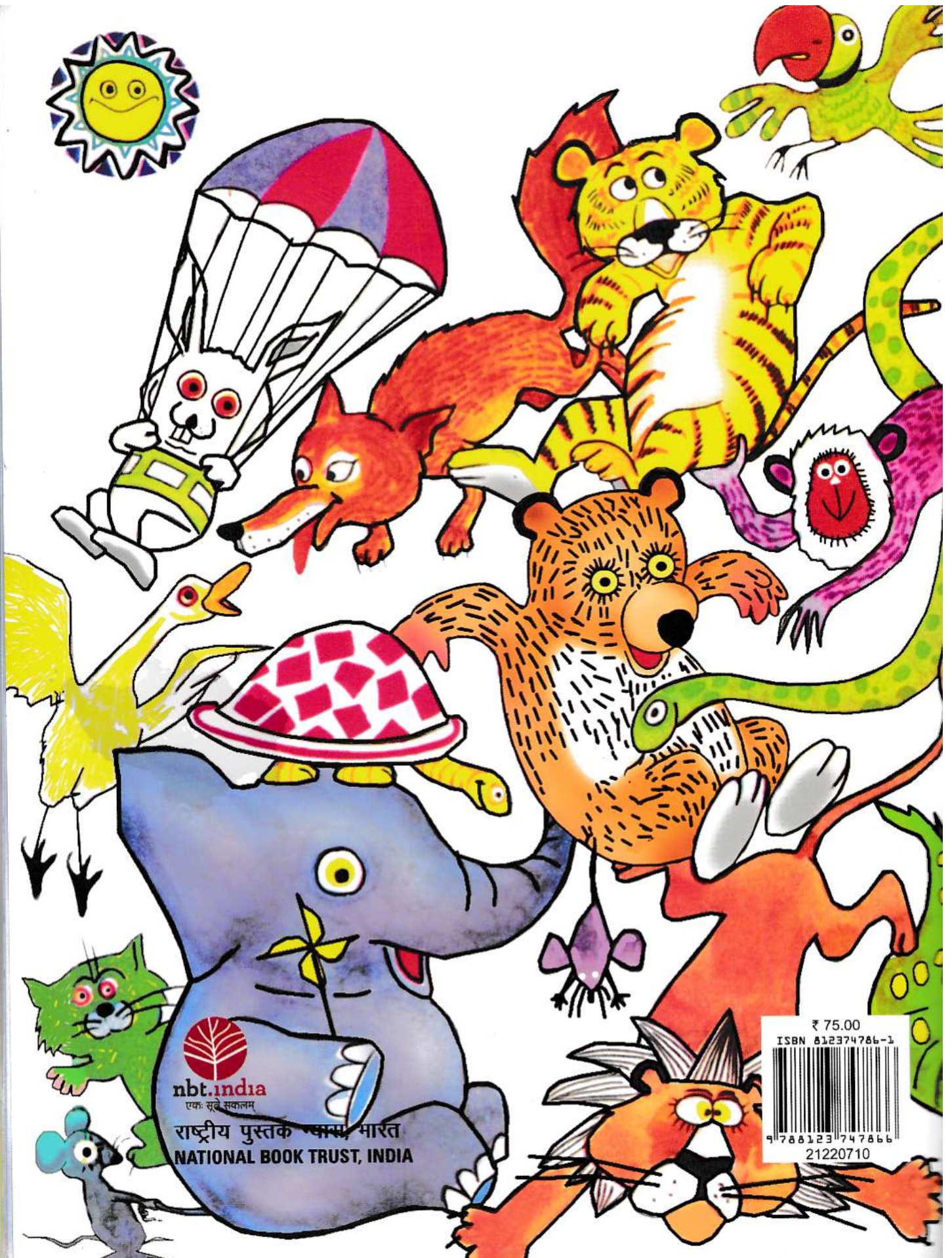
nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
₹ 75.00
ISBN 812374786-1
9 788123 747866
21220710